अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

अ.भा. साधारण सभा, भोपाल

आश्विन शुक्ल द्वितीया एवं तृतीया वि.स. 2081, 4-5 अक्टूबर, 2024

प्रस्ताव - 1

'विकसित भारत' का उन्मेष और 'शिक्षकों की भूमिका'

अपनी स्वतन्त्रता के 75 वर्ष बीतने के बाद आज का भारत कई मायने में एक युगान्तकारी परिवर्तन का वाहक और साक्षी बनता दिख रहा है। नया भारत आत्मविश्वास से भरपूर और अपने मूल्यों के प्रति सजग रहते हुए उत्तरदायित्वपूर्ण तरीके से विश्व का नेतृत्व करने को उत्सुक है। आज भारत विश्व की पाँचवीं से तीसरी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल तकनीक, तकनीकी नवाचार जैसे क्षेत्रों में जो उपलब्धियाँ हासिल की हैं उसने राष्ट्र के आत्मबोध को जगाने के साथ-साथ विश्व के समक्ष अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन भी किया है।

नया भारत कहीं अधिक अनुसंधानपरक हो रहा है। नेशनल रिसर्च फाउण्डेशन की स्थापना, अत्यल्प समय में कोरोना वैक्सीन का निर्माण, 140 करोड़ लोगों का समयबद्ध टीकाकरण तथा 100 से ज्यादा देशों को टीका उपलब्ध कराना, G 20 जैसे सफल आयोजन भारत की क्षमता के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं को दर्शाता है। भारत ने विगत कुछ वर्षों में 25 करोड़ से ज्यादा लोगों को गरीबी रेखा से निकाला है। भारत का चन्द्रयान मिशन 3, हरित ऊर्जा का बढ़ता उत्पादन, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम और ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स की नवीनतम रिपोर्ट में 39वाँ स्थान पर आना, विश्व मंच पर भारत के प्रति एक विश्वास जागृत किया है। आज भारत विश्व के प्रमुख आपूर्ति श्रृंखला एवं उत्पादक के रूप में आशा की किरण बना है। वैश्विक संकट के समय में भारतीयों की रक्षा का प्रश्न हो या अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों में भारत के दृष्टिकोण का विषय हो भारत ने बिना किसी दबाव के एक स्वतन्त्र नीति का अनुसरण किया है। विश्व के गरीब और पिछड़े राष्ट्रों को प्रगति के मुख्यधारा में शामिल करने के लिए भारत ग्लोबल साउथ की प्रमुख आवाज बना है। आज विश्व प्रमुख चुनौतियों के समाधान के लिये भारत की प्रमुख भूमिका को अपरिहार्य मान रहा है।

आज की यह परिस्थिति हमें उत्साह और आह्लाद देती है, परन्तु मार्ग में अनेक चुनौतियाँ और बाधायें भी हैं। राष्ट्र के बाहर और भीतर ऐसी शक्तियाँ हैं जिन्हें भारत की उभरती व सशक्त उपस्थिति बिल्कुल भी भा नहीं रही है। अनेक प्रकार से ऐसी शक्तियों के आघात प्रतिघात बढ़ रहे हैं। इनका पूरा एक इको सिस्टम कार्य कर रहा है जो देश के भीतर और बाहर दोनो जगह सक्रिय है। इस इको सिस्टम की एक श्रृंखलाबद्ध संरचना है, जिसमें बुद्धिजीवी, पत्रकार, राजनीतिक कार्यकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, फिल्म एवं वेबसीरीज के निर्माता व निर्देशक, लेखक और विभिन्न प्रकार के गैर सरकारी संगठन शामिल हैं। ये बड़े ही सुनियोजित तरीके से एक छद्म वातावरण का निर्माण करते हैं जो भारत विरोधी और खतरनाक है। भारतीय समाज एवं संस्कृति को विकृत ढंग से प्रस्तुत करना, उसे मानवता विरोधी और असमानता पर आधारित सिद्ध करना इनका प्रमुख लक्ष्य है। ये शक्तियाँ एक खास मानसिकता के साथ भारत की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचना और संवैधानिक संस्थाओं पर प्रहार कर रही हैं। इसके लिए इनके कुछ साधन हैं, जैसे सूचनात्मक युद्ध, जनसांख्यिकीय बदलाव, कंवर्जन, अवैध घुसपैठ, भारत विरोधी दुष्प्रचार आदि। भारतीय पर्वों के अवसर पर हिंसक घटनायें, CAA विरोधी सरीखे आन्दोलन, सिनेमा और वेब सीरीज के माध्यम से दुष्प्रचार, हिन्दुओं को हिंसक बताना, सनातन को डेंगू मलेरिया की संज्ञा देना तथा सनातन को मिटाने जैसा संकल्प लेना, विदेशों में भारत की विकृत छवि प्रस्तुत करने जैसी घटनायें तो मात्र इस बीमार मानसिकता के लक्षण मात्र हैं। वैश्विक बाजार की शक्तियाँ इस वैचारिक और मनोवैज्ञानिक युद्ध का वित्तपोषण कर रही हैं। जॉर्ज सोरोस जैसे लोग भारत की लोकतंत्र के नाम पर छवि बिगाड़ने का प्रयास कर रहे हैं। हिंडेनबर्ग जैसी संस्थाएँ भारत की अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रचार के माध्यम से खतरा बन रही हैं। जातीय भेदभाव के नाम पर सामाजिक विभाजन का प्रयास किया जा रहा है। ऊपर से ये घटनायें भले अलग-अलग दिखती है परन्तु ये सभी एक उस सूत्र से एकबद्ध हैं जो भारत विरोधी हैं और विघटनकारी है। यह सबकुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्षता तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में किया जा रहा है।

भारत विरोध की यह मानसिकता उस औपनिवेशिक विरासत का नवीन संस्करण है जिसने कभी भारत को गुलाम बनाने के लिए सामाजिक विभाजन, सांस्कृतिक प्रहार और विकृत इतिहास को अपना हथियार बनाया था। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ यह

अनुभव करता है कि आज की इन चुनौतियों से निबटने के लिये भारत को पुनः अपने उस 'स्व' की ओर लौटना होगा जो उसके सांस्कृतिक और वैचारिक अधिष्ठान का मूल है। हमें अपने उस पंच-प्रण (सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण जागरूकता, स्वदेशी पर जोर, नागरिक कर्तव्य) को अधिकाधिक अपने सामाजिक जीवन में अपनाना होगा जो सदा से भारत की मूल प्रकृति के अनुरूप है। हमारी विभिन्नता आभ्यन्तर में एकता के सूत्र से बंधी हुयी है। कहा गया है- एकोऽहंबहुस्याम् (मैं एक से बहुत हो जाऊँ)। हमारा वेदान्त दर्शन सम्पूर्ण सृष्टि में समानता का दर्शन है। यही अभेद दृष्टि हमारे संस्कृति का मूल भाव है। भगवद्गीता सामाजिक समरसता का संदेश देते हुए कहती है ''अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रः करुण एव च (सब प्राणियों के प्रति द्वेष रहित, मैत्रीभाव और करुणा)।'' परिवार हमारे लिए संस्कारों, संवेदनाओं और मर्यादाओं को सीखने की संस्था रही है। भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था में स्त्री और पुरुष समान नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। नारी पूरे पारिवारिक व्यवस्था के केन्द्र में है, वह परिवार के संस्कार और संचालन की धुरी है। यही परिवार एक नैतिक और उत्तरदायित्वपूर्ण समाज का आधार रहा है। प्रकृति हमारे लिए कभी भी भोग का विषय नहीं रही है। नदी, जल, पर्वत, वृक्ष, वायु आदि प्राकृतिक संरचनायें हमारे लिए आराध्य रही हैं। प्रकृति के साथ हमारा एक साहचर्य भाव है। हम 'तेनत्यक्तेनभुञ्जीथा' (त्यागपूर्वक उपभोग) में विश्वास करने वाली संस्कृति रहे हैं। ये विचार हमारे लिए आदर्श मात्र नही है बल्कि हमारी नीति का अंग है। वसुधैवकुटुम्बकम् के दर्शन पर ही हमने G-20 में एक समावेशी, महत्त्वाकाँक्षी, निर्णायक और कार्योन्मुख दृष्टिकोण के माध्यम से 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' को अपना लक्ष्य बनाया है। हम सम्पूर्ण विश्व के कल्याण में विश्वास रखते हैं। भारत का पूरा चिंतन व दृष्टिकोण अधिकार नहीं बल्कि कर्तव्य केन्द्रित है। हमारे सामाजिक जीवन का वैचारिक आधार कर्तव्य की शिक्षा देता है, राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्य और प्रजा का राजा के प्रति कर्तव्य बताया गया है। कर्तव्य का मूल भाव दायित्व, पारस्परिक सद्भाव और संवेदना पर आधारित है।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का विचार है कि इन संघर्षों के समाधान में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। शिक्षक शैक्षिक परिसरों में इन शक्तियों के बढ़ते नकारात्मक दुष्प्रचार के प्रभाव को समाप्त कर इसे सकारात्मक दिशा देने में सक्षम हैं। महासंघ का यह मत है कि शिक्षकों को समाज और छात्रों में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना जागृत करने के लिए आगे आना चाहिए। हमारी भारतीयता केन्द्रित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केन्द्र में भी राष्ट्र हित और छात्र हित ही है। यह महासंघ सर्वसम्मत से शिक्षक समुदाय और सरकारों से यह आह्वान करती है कि ''राष्ट्र की इसी मूल प्रकृति और दृष्टि को आधार बनाकर अपनी स्थिति के अनुरूप भविष्य का विकास क्रम निर्धारित करना होगा। इस 'स्व' के साक्षात्कार के बिना हम इन विकृत शक्तियों का सामना नहीं कर सकते। विकसित भारत की नींव का अधिष्ठान हमारा यही विचार हो सकता है जो सदियों से भारतीय जीवन का आधार रहा है जो सम्पूर्ण मानवता के लिये कल्याणकारक है।''

❑❑❑